दादी का प्रेमपूर्ण प्रशासन हमारे लिए पथ प्रदर्शक

अव्यक्त बापदादा की श्रीमत, निमित्त भाई-बहनों के साथ विचार विमर्श करके सबकी राय को सम्मान देकर चलने वाली, मुस्कुराते हुए सबके सिर को सहलाकर उनके अन्दर के भाव को परख, स्नेहपूर्ण पालना दे निश्छल भाव को व्यक्त करने वाली, दूरदर्शिता की एक अहम मिसाल, जिन्होंने न किसी के अवगुण देखे, न परचिंतन किया। विशेषताओं की प्रतिमूर्ति, दैवी परिवार का सदा ध्यान रखने वाली, दूरदर्शी, पारदर्शी, मर्मस्पर्शी दादी जी का प्रेमपूर्ण निश्छल भाव आज भी हमें सुख और सुकून देता है।

दादी का जीवन फरिश्ता समान रहा

दादी जी को हमेशा सतयुगी विश्व की स्थापना हेतु नई-नई ईश्वरीय सेवाओं की योजना बनाने का बहुत ही उमंग-उत्साह रहता था कि जल्द से जल्द इस सृष्टि पर भगवान की प्रत्यक्षता हो जाये, इसके लिए वह सदा प्रयासरत रहती थीं। भगवान की प्रत्यक्षता करने के लिए उनके मन में भी कई श्रेष्ठ विचार आते थे लेकिन वो हमेशा अन्य निमित्त वरिष्ठ भाई-बहनों के साथ विचार-विमर्श करके सभी की राय लेकर हर वर्ष नई-नई योजनाएं बनाती तथा उसको कार्यान्वित कराती। हर वर्ष जब वार्षिक मीटिंग होती थी तो उसके पूर्व वह सभी कार्य योजनाओं का पुनर्वलोकन करती तथा बीते हुए अनुभवों के आधार पर ईश्वरीय सेवाओं को नया आयाम देती। दादी जी के जीवन व पुरूषार्थ को देखते हुए यही प्रेरणा मिलती है कि फरिश्ता सो देवता बनने का लक्ष्य सदा सामने रखें और अव्यक्त बापदादा की श्रीमत को सदा आदरपूर्वक स्वीकार करते अपने जीवन में उतारते रहें तो हम भी दादी के पद् चिन्हों पर चलते हुए अपनी सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त कर उड़ते-उड़ते सूक्ष्म वतन के फरिश्ते बन सकते हैं। *- राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़*

बाबा ने जो कहा दादी ने वैसा ही किया

मुझे याद आता है जब शक्तिनगर का सेवाकेंद्र तोड़कर पुनः बनाना था, तब दादी ने मुझे कहा कि ये माउण्ट आबू के बाद विश्व का प्रथम सेवाकेंद्र है, बहुत प्यार से और बहुत सुंदर इस स्थान को बनाना। क्योंकि स्थान, वातावरण और इसके वायब्रेशन से भी लोग खींचे चले आते हैं। मुझे दादी की एक बात याद आती है कि जब दादी बहुतों से मिलती थीं और व्यस्त रहती थीं तो एक बार जब अव्यक्त बापदादा दादी से मिल रहे थे, तो खास दादी को कहा कि मैं समझता हूँ कि आप बहुत व्यस्त रहती हो। अपने लिये योग का समय नहीं निकाल सकती। उस समय बाबा ने शिक्षायें दीं कि आप एक ग्रुप के बाद दूसरे ग्रुप को मिलती हो, तो जब एक ग्रुप को मिलो, तो पहले तीन मिनट उस ग्रुप को याद में बिठाओ, उसके पश्चात् उनसे मिलना शुरु करो। जब वो ग्रुप पूरा हो जाए तो दो मिनट याद में बिठाकर उनको विदाई दो। उसके पश्चात् जब सेकेण्ड ग्रुप आता है, पुनः उनको दो-तीन मिनट याद में बिठाओ, और जाते समय फिर दो मिनट याद कराकर उन्हें भेजो। इस प्रकार याद का तांता आपका बना रहेगा। इस प्रकार बाबा ने विशेष दादी को ये कहा कि समय लम्बा नहीं मिलता तो कोई बात नहीं, लेकिन इस प्रकार अपना समय निकालना। और मैं देखती थी कि दादी ने बाबा की इस आज्ञा का पालन किया। *- राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, रशिया की निदेशिका तथा महिला प्रभाग अध्यक्षा, ब्रह्माकुमारीज़*

दादी को हमेशा सेवा में नये-नये प्लान बनाने में रूचि रही

दादी को हमेशा नवीनता प्रिय थी। मैं अहमदाबाद में आई तो बाद में पहले, पहला प्रोजेक्ट मैंने एक राजयोग शिविर का प्रारम्भ किया, 21 मई 1973 को और फिर वो 3 दिन के राजयोग शिविर का समाचार मैंने दादी जी को लिखकर भेजा, दादी के पास पत्र पहुँचते ही दादी ने मुझे फोन करके बुलाया और कहा कि चन्द्रिका तुमने राजयोग शिविर का प्रयोग किया है तो ये हमारी सभी दादियां, ये सब बड़ी दीदीयां हैं उन्हों को तुम ये अनुभव कराओ। मुझे संकोच तो बहुत हुआ लेकिन दादी ने कहा ये मनोहर दादी तुम्हारे बाजू में बैठेगी और तुम्हें ये ज़रूर करवाना है। दादी भी बीच-बीच में आकर बैठ जाती थी। फिर तीन दिन के अनुभव के बाद दादी ने मुझे कहा कि चन्द्रिका अभी यहाँ बैठो तुम और ये सारे लेक्चर की बुक तैयार करके दो, वो तैयार करके दी तो फिर कहा अभी इसकी ट्रेनिंग की बुक तैयार करके दो। तो दादी ने मुझे वहाँ बिठा दिया और मैंने वहाँ बैठकर सब कुछ लिखकर के दिया। दादी ने उसी घड़ी उसकी लिथो-कॉपी निकलवाई और जो बहनें उस समय मीटिंग के अर्थ आई हुई थी, उन सभी को तो उसी समय कॉपी दे दिया। बाद में, पूरे भारत के सभी सेवाकेंद्रों पर दादी ने वो राजयोग शिविर की पुस्तिका भेजी और सभी को प्रेरित किया। इतने तक ही नहीं, फिर दादी ने अपने पाण्डव भवन में एक राजयोग भवन खास बनवाया और वहाँ पर वी.आई.पीज़ के लिए राजयोग शिविर का आयोजन प्रारम्भ किया। *- राजयोगिनी ब्र.कु चन्द्रिका दीदी, युवा, सांस्कृतिक एवं कला प्रभाग की अध्यक्षा, ब्रह्माकुमारीज़*

दादी जी का वो हँसमुख चेहरा व निश्छल स्नेह भुला नहीं पाये

दादी सदा कहती कि मीडिया वाले शिवबाबा के राइट हैंड हैं। इन्हीं द्वारा सारे विश्व में ईश्वरीय संदेश पहुंचेगा। मीडिया वाले जब भी व्यक्तिगत रूप से या कॉन्फ्रेंस में आते थे तो दादी सबसे मिलती थी और आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में उमंग-उत्साह दिलाती थी। आज भी वे यहां आते हैं तो उन्हें याद करना नहीं भूलते। दादी का हँसमुख चेहरा व निश्छल स्नेह भरा व्यवहार आज भी वे भुला नहीं पाये हैं। दादी का उमंग सदा रहता था कि बाबा का संदेश सारे विश्व में पहुंचे। पहले-पहले 'ज़ी टी.वी.' की सेवा शुरू हुई। उस समय बाबा का संदेश देने के लिए समय दिया गया। यह सुनकर दादी बहुत खुश हुई। टी.वी. द्वारा ईश्वरीय सेवा दादी के होते ही शुरू हो गई थी। दादी की दूरदर्शिता गजब की थी। सेवा के विस्तार को देख दादी ने सर्व सेवा साथियों के बीच यह संकल्प रखा कि इन सेवाओं से सभी लोगों को अवगत कराने के लिए सेवा समाचार हरेक के पास पहुंचे उसके लिए एक अपना 'न्यूज़ पेपर' होना चाहिए। तब सबकी राय से पंद्रह दिन में एक बार 'ओमशान्ति मीडिया' निकालने का निर्णय लिया गया। जो आज बाबा का संदेश विश्व के हर कोने में पहुंच रहा है। यह सेवा वर्ष 1999 में ही शुरू हो गई थी। *- राजयोगी ब्र.कु. करूणा, मल्टीमीडिया चीफ, ब्रह्माकुमारीज़*

राजयोग प्रशिक्षण का प्रथम प्रशिक्षक दादी ने बनाया

प्रभु के आकाश का दैदीप्यमान सितारा दादी प्रकाशमणि का जैसा नाम वैसा ही व्यक्तित्व था। परमपिता परमात्मा के सत्य ज्ञान का प्रकाश, सचमुच ही दादी ने अपने उत्कृष्ट आचरण द्वारा समग्र विश्व में फैलाया। यह परम सौभाग्य रहा है कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में जब से हम आये, हमारे परिवार का सम्बंध दादी से ही रहा। हमें शुरु से ही दादी की पालना मिली। सन् 1975 से 1985 के दौरान राजयोग शिविर कराने हेतु दादी ने भारत के विभिन्न राज्यों में मुझे भेजा। दादी ने ईश्वरीय कार्य को समग्र विश्व में फैलाया और सबका उमंग-उत्साह बढ़ाते हुए बेहद कार्य कराती रहीं। समर्पण जीवन के 22 वर्षों तक मैं सेवाकेंद्रों पर रहकर सेवा करती रही। उसके बाद सन् 1993 से मुख्यालय में दादी के पास रहने का मौका मिला। *- राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, बिज़नेस एंड इंडस्ट्रीज विंग की संयोजिका*

दादी के हृदय में हरेक के लिए महत्वपूर्ण स्थान रहा

दादीजी सदैव परिवार के एक-एक सदस्य को बहुत ही महत्वपूर्ण और खास समझती थीं। दादी की नज़रों में सभी एक समान महत्व रखते थे इसलिए उन्होंने कभी किसी को अलग से कोई खास टोली या गिफ्ट नहीं दिया। उन्होंने कभी किसी के अवगुण नहीं देखे, बल्कि सभी की विशेषताओं की सराहना करती रहीं। जब भी मधुबन में कोई ग्रुप आता तो दादी सभी के रहने की व्यवस्था तथा उनकी संतुष्टता का पूरा ध्यान रखती थीं। उन्होंने दैवी परिवार का मुखिया होने का रोल बखूबी निभाया। दादी पूर्णतः निरहंकारी थीं। इतने विशाल आध्यात्मिक संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में अपने अधिकारों का मानवीय सद्भावना के साथ इस्तेमाल करती थीं। वह हमेशा याद कराती थीं कि यह कार्य बाबा का है और वो करा रहा है। उन्होंने बाबा पर दृढ़ निश्चय एवं समर्पण होकर सभी परिस्थितियों को पार किया। *- राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़*

दादी जी का व्यक्तित्व पारदर्शिता से ओत-प्रोत रहा

एक बार लोकसभा के तत्कालीन विपक्ष के नेता माननीय वाजपेयी जी आबू आये थे। हमने उनको ज्ञानसरोवर में आने के लिए निमंत्रण दिया था। वहां उन्होंने भरी सभा में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि दादी जी खुद ही एक बड़ी नेता हैं, उन्होंने अपने जैसे इतने सारे कार्यकर्त्ताओं को तैयार किया है, यह बहुत प्रशंसनीय कार्य है। दादीजी का व्यक्तित्व पारदर्शिता से ओत-प्रोत रहा। उनके नेतृत्व में ईश्वरीय विश्व विद्यालय समाज परिवर्तन की बहुत बड़ी सेवा कर रहा है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक खुली किताब है। दादी न केवल ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों की, राजनेताओं की भी प्रेरणास्रोत थीं। और साथ ही साथ धर्म नेताओं की भी श्रद्धेया थीं। कोई महामंडलेश्वर हो, जगद्गुरू हो, साधु-संत-महात्मा हो, चाहे उत्तर भारत के हों, चाहे दक्षिण के, दादी को बहुत सम्मान और पूज्य भावना से देखते थे। उनके लिए भी दादी आदर्श थीं।

दादी के नेतृत्व में मुख्यालय आबू पर्वत पर और देश के अन्य स्थानों पर अनेक धार्मिक सम्मेलन हुए। आये हुए सभी संत-महात्मा-गुरू लोगों ने यह अनुभव किया और अपने भाषणों में व्यक्त किया कि दादी जी एक आदर्श महिला हैं तथा आज के संसार में अनुकरण करने के योग्य एक अद्वितीय आध्यात्मिक नेता हैं। *- राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़*

ज्ञान के साथ आत्माओं की सूक्ष्म पालना करना दादी ने सिखाया

1976 से मैंने दादी के कहने पर मधुबन में रहना शुरु किया तो हम दादी से मिलते थे। एक दिन मैंने उनसे कहा कि मैं यहां मधुबन में सेवा तो करती हूँ लेकिन मैं अपने ऊपर और क्या विशेष ध्यान दूं तो दादी ने मुझे बहुत सुंदर बात कही। दादी ने मुझसे कहा कि शीलू, तुम टीचर तो बहुत अच्छी हो, ज्ञान बहुत अच्छा सुनाती हो, बहुत अच्छे लेक्चर देती हो, बहुत लोग प्रभावित होते हैं, विदेशी भी बहुत खुश होते हैं, लेकिन अभी तुमको एक काम और करना है। तो मैंने कहा कि दादी आप बतायें, तो दादी की एक विशेषता थी कि किसी की भी कमी-कमज़ोरी सीधा नहीं बोलती थीं। इसलिए मैंने कहा कि दादी आपने मेरी महिमा तो बहुत की लेकिन मेरी कोई कमी-कमज़ोरी हो तो वो भी बताओ। तो दादी ने कहा कि देखो, तुम टीचर बहुत अच्छी हो, लेकिन अब तुमको एक माँ की तरह सबको पालना देनी है। क्योंकि विदेशी आते हैं, उनको इस प्रकार की पालना चाहिए। बहुत प्यार चाहिए उनको। जितना आप उनको प्यार देंगे, बाबा की तरफ ले जायेंगे तो वे बाबा के पक्के बच्चे बन जायेंगे। तो कैसे विदेशियों की सेवा करनी है और कैसे उनको बाबा के इतना नज़दीक लाना है, ये दादी ने हमें सिखाया। *- राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी, शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा, ब्रह्माकुमारीज़*